BA Part - III

History

By - Dr. Durga Bhawani

B A Part II History (Hons) VIII Th Paper.

Q. प्रथम विश्व युद्ध में रूस के पराजय के कारणों का वर्णन करें।

Ans— 28 July 1914 ई० को प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत हुई और 01 August को जर्मनी ने रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस तरह रूस प्रथम विश्व युद्ध में शामिल हो गया। 04 Aug. को इंगलैंड ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस तरह धीरे-धीरे इसका रूप विस्तृत होता गया और इसने विश्व युद्ध का रूप धारण कर लिया। इस युद्ध में रूस की पराजय हो गयी। रूस की पराजय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे।

① जारशाही के विरुद्ध असन्तोष — उस समय रूस में जारशाही के विरुद्ध भयंकर असंतोष था, और उसके विरुद्ध 1905 ई० में क्रांति हुई थी जो सफल नहीं हो सकी। भूखमरी एवं बेरोजगारी के कारण जारशाही विरोधी भावना बढ़ती जा रही थी। जगह-जगह तोड़-फोड़, उपद्रव आदि हो रहे थे। इस कारण प्रथम विश्व युद्ध के लिए तैयारी पूरी नहीं हो सकी थी। जो पराजय का मुख्य कारण बनी।

② आर्थिक पिछड़ापन — युद्ध के समय रूस आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़ा हुआ था और युद्ध काल में तो उसकी आर्थिक रीढ़ ही टूट गई औद्योगिक तथा कृषि उत्पादन पर तो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। यहाँ तक कि अस्त्र-शस्त्र खरीद पर भी उसे काफी धन कठोर शर्तों पर देना पड़ा और धन के अभाव में पराजय अवश्यम्भावी था।

(3) बोल्शेविकों द्वारा युद्ध का विरोध — बोल्शेविक दल के लोग शुरू से ही युद्ध का विरोध कर रहे थे तथा अनिवार्य सैनिक सेवा का भी विरोध किया। कृषक तथा शहरी श्रमिक भी विरोध एवं विद्रोह कर रहे थे और बोल्शेविक इन में जम कर हिस्सा ले रहे थे। इस प्रकार इन विद्रोहों ने युद्ध में विजय प्राप्त करना असंभव बना दिया।

(4) अस्त्र-शस्त्र की कमी — रूसी सेना के पास अस्त्र-शस्त्रों की काफी कमी थी। यद्यपि रूसी सेना काफी विशाल थी लेकिन उनके पास अस्त्र-शस्त्र न के बराबर थी, कई सैनिकों के पास तो राइफल तक नहीं थी युद्ध मोर्चे पर प्रतिकिलो मीटर मात्र दो ही राइफलें थी इसके अलावा गोला-बारूद की भी कमी थी। इसके पास आधुनिक हथियार नहीं थे और जो थे उनकी मारक क्षमता काफी कम थी। इस प्रकार ये भी एक प्रमुख कारण मानी जाती है।

(5) रसद (अनाज) का अभाव — उस समय रूस में अनिवार्य सैनिक सेवा लागू कर दी गई थी जिसका प्रतिकूल प्रभाव कृषि उत्पादन पर पड़ा था। पैदावार में कमी के कारण अनाज का भयंकर अभाव हो गया था। यहाँ तक कि विशाल सैनिक बल के लिए अनाज का इन्तजाम मुश्किल हो रहा था। दूसरी बात यह थी कि परिवहन व्यवस्था के अस्त-व्यस्त हो जाने के कारण सैनिकों तक अनाज नहीं पहुंच पाता

पाता था। ऐसी स्थिति में भूखे सैनिकों के लिए लड़ाई में विजय प्राप्त करना असंभव था।

(6) सैनिकों का असंतोष - अस्त्र-शस्त्र एवं अनाज की कमी के अभाव में रूसी सेना में हताहतों की संख्या काफी अधिक रही थी। उनकी चिकित्सकीय व्यवस्था भी अच्छी नहीं थी तथा दवा की भी काफी कमी थी। इन्हीं सब कारणों से रूसी सेना में काफी असंतोष व्याप्त था ऐसी अवस्था में किसी भी युद्ध में विजयी होना असंभव था।

(7) यातायात की असुविधा - विश्व युद्ध के समय रूस की यातायात व्यवस्था काफी खराब हो चुकी थी। रेलों एवं सड़कों की अव्यवस्था के कारण युद्धोपयोगी सामानों एवं अनाज को उचित जगह एवं उचित समय पर पहुँचाना कठिन हो गया था। यह भी पराजय का एक कारण बना।

(8) जर्मनी की युद्ध नीति - युद्ध के शुरुआती दौर में रूसी सेना आगे बढ़ रही थी और आस्ट्रिया - हंगरी पीछे छोड़ते हुए जर्मनी की सीमा के निकट पहुँच रही थी। अतः जर्मनी को चिंता हुई तथा उसने अपनी सेना को इसी जगह केन्द्रित कर ऑस्ट्रिया हंगरी में पीछे की ओर से हमला करके सेना की व्यवस्था तोड़ने की कोशिश की।

दूसरी तरफ रूसी कमान ने अपनी सेना की कुछ टुकड़ियों को आस्ट्रिया की सीमा पर भेज दिया। ये सैनिक लम्बे समय के कारण थक चुके थे। अतः वे केवल अपने बचाव में युद्ध करने लगे यही स्थिति पश्चिम सीमा पर भी हुई जो युद्ध में सहायक बनी।

(9) **मित्र राष्ट्रों पर आश्रित** — रूस की सरकार अपनी शक्ति से कहीं अधिक मित्र राष्ट्रों की शक्ति पर आश्रित थी। रूस जैसे विशाल देश के लिए यह आत्मघाती कदम था और जार को इसका कटु मूल्य युद्ध में पराजय के रूप में चुकाना पड़ा।

(10) **संदेश का गलत तरीका** — रूसी लोग एक-दूसरे सैनिक टुकड़ियों को संदेश सीधे शब्दों में भेजते थे और संदेश प्रसारण में किसी भी प्रकार की कोई कोडिंग नहीं हुआ करती थी। जर्मन सैनिकों ने इसका लाभ उठाया तथा रूसी फौजों को कई घमासान युद्धों में घेर लिया। जल्द ही रूसी आक्रमणों को रोक दिया गया। रूसी सेना को जर्मनी की धरती छोड़ कर वापस लौटने को मजबूर होना पड़ा।

— x —